Job

Chapter 4

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1

וַיַּעַן	אֱלִיפַז	הַתֵּימָנִי	וַיֹּאמַר׃
और-उत्तर-दिया	एलीफ़ज़	तेमानी-ने	और-कहा
	H0464	H8489	H0559

फिर तेमान के एलीपज ने उत्तर दिया:

2

הֲנִסָּה	דָבָר	אֵלֶיךָ	תִּלְאֶה	וַעְצֹר	בְּמִלִּין	מִי	יוּכָל׃
क्या-प्रयास-किया-गया	बात	तुझसे	थकाएगा-तुझे	परन्तु-रोकना	शब्दों-में	कौन	सकता-है
H5254	H1697	H0413	H3811	H6113	H4405	H4310	H3201

“यदि कोई व्यक्ति तुझसे कुछ कहना चाहे तो क्या उससे तू बेचैन होगा मुझे कहना ही होगा!

3

הִנֵּה	יִסַּרְתָּ	רַבִּים	וְיָדַיִם	רָפוֹת	תְּחַזֵּק׃
देख	तूने-सिखाया	बहुतों-को	और-हाथ	कमज़ोर	तूने-मज़बूत-किया
H2009	H3256		H3027	H7504	H2388

हे अय्यूब, तूने बहुत से लोगों को शिक्षा दी और दुर्बल हाथों को तूने शक्ति दी।

4

כּוֹשֵׁל	יְקִימוּן	מִלֶּיךָ	וּבִרְכַּיִם	כֹּרְעוֹת	תְּאַמֵּץ׃
लड़खड़ाते-को	उठाते-थे	तेरे-शब्द	और-घुटनों	काँपते-हुए	तूने-दृढ़-किया
H3782		H4405	H1290	H3766	H0553

जो लोग लड़खड़ा रहे थे तेरे शब्दों ने उन्हें ढाढ़स बंधाया था। तूने निर्बल पैरों को अपने प्रोत्साहन से सबल किया।

5

כִּי	עַתָּה ׀	תָּבוֹא	אֵלֶיךָ	וַתֵּלֶא	תִּגַּע	עָדֶיךָ	וַתִּבָּהֵל׃
क्योंकि	अब	आती-है	तुझ-पर	और-थक-गया-तू	छूती-है	तुझको	और-घबरा-गया-तू
	H6258	H0935	H0413	H3811	H5060	H5704	H0926

किन्तु अब तुझ पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा है और तेरा साहस टूट गया है। विपदा की मार तुझ पर पड़ी और तू व्याकुल हो उठा।

6

הֲלֹא	יִרְאָתְךָ	כִּסְלָתֶךָ	תִּקְוָתְךָ	וְתֹם	דְּרָכֶיךָ׃
क्या-नहीं	तेरा-डर	तेरा-भरोसा	तेरी-आशा	और-खराई	तेरी-राहों-की
H3808	H3374	H3690		H8537	H1870

तू परमेश्वर की उपासना करता है, सो उस पर भरोसा रख। तू एक भला व्यक्ति है सो इसी को तू अपनी आशा बना ले।

7

זְכָר־	נָא	מִי	הוּא	נָקִי	אָבָד	וְאֵיפֹה	יְשָׁרִים	נִכְחָדוּ׃
याद-कर-	कृपया	कौन	वह	निर्दोष	नाश-हुआ	और-कहाँ	सीधे	मिटाए-गए
H2142	H4994	H4310	H1931		H0006	H0375	H3477	H3582

अय्यूब, इस बात को ध्यान में रख कि कोई भी सज्जन कभी नहीं नष्ट किये गये। निर्दोष कभी भी नष्ट नहीं किया गया है।

8

כַּאֲשֶׁר	רָאִיתִי	חֹרְשֵׁי	אָוֶן	וְזֹרְעֵי	עָמָל	יִקְצְרֻהוּ׃
जैसा	देखा-मैंने	जोतनेवाले	अन्याय	और-बोनेवाले	कष्ट	काटते-हैं-उसको
	H7200		H0205	H2232	H5999	

मैंने ऐसे लोगों को देखा है जो कष्टों को बढ़ाते हैं और जो जीवन को कठिन करते हैं। किन्तु वे सदा ही दण्ड भोगते हैं।

9

מִנִּשְׁמַת	אֱלוֹהַּ	יֹאבֵדוּ	וּמֵרוּחַ	אַפּוֹ	יִכְלוּ׃
साँस-से	एलोहा-की	नाश-होते-हैं	और-हवा-से	उसके-क्रोध-की	समाप्त-होते-हैं
H5397	H0433	H0006	H7307	H0639	H3615

परमेश्वर का दण्ड उन लोगों को मार डालता है और उसका क्रोध उन्हें नष्ट करता है।

10

שַׁאֲגַת	אַרְיֵה	וְקוֹל	שָׁחַל	וְשִׁנֵּי	כְפִירִים	נִתָּעוּ׃
दहाड़	सिंह-की	और-आवाज़	गर्जनेवाले-सिंह-की	और-दाँत	जवान-सिंहों-के	तोड़े-गए
H7581			H7826	H8127		H5421

दुर्जन सिंह की तरह गुर्रते और दहाड़ते हैं, किन्तु परमेश्वर उन दुर्जनों को चुप कराता है। परमेश्वर उनके दाँत तोड़ देता है।

11

לַיִשׁ	אֹבֵד	מִבְּלִי־	טָרֶף	וּבְנֵי	לָבִיא	יִתְפָּרָדוּ׃
बूढ़ा-सिंह	नाश-होता-है	बिना-	शिकार	और-बच्चे	सिंहनी-के	बिखर-जाते-हैं
H3918	H0006	H1097	H2964			H6504

बुरे लोग उन सिंहों के समान होते हैं जिन के पास शिकार के लिये कुछ भी नहीं होता। वे मर जाते हैं और उनके बच्चे इधर—उधर बिखर जाते है, और वे मिट जाते हैं।

12

וְאֵלַי	דָּבָר	יְגֻנָּב	וַתִּקַּח	אָזְנִי	שֵׁמֶץ	מֶנְהוּ׃
और-मुझको	बात	चुपके-आई	और-लिया	मेरे-कान-ने	थोड़ा-सा	उसमें-से
H0413	H1697	H1589	H3947	H0241	H8102	

“मेरे पास एक सन्देश चुपचाप पहुँचाया गया, और मेरे कानों में उसकी भनक पड़ी।

13

בִּשְׂעִפִּים	מֵחֶזְיֹנוֹת	לָיְלָה	בִּנְפֹל	תַּרְדֵּמָה	עַל־	אֲנָשִׁים׃
विचारों-में	दर्शनों-से	रात-के	गिरने-में	गहरी-नींद	पर-	मनुष्यों
	H2384	H3915	H5307	H8639		H0376

जिस तरह रात का बुरा स्वप्न नींद उड़ा देता हैं, ठीक उसी प्रकार मेरे साथ में हुआ है।

14

פַּחַד	קְרָאַנִי	וּרְעָדָה	וְרֹב	עַצְמוֹתַי	הִפְחִיד׃
भय	आया-मुझ-पर	और-काँपना	और-अधिकांश	मेरी-हड्डियों	डरा-दिया
H6343	H7122	H7461	H7230	H6106	H6342

मैं भयभीत हुआ और काँपने लगा। मेरी सब हड्डियाँ हिल गई।

15

וְרוּחַ	עַל־	פָּנַי	יַחֲלֹף	תְּסַמֵּר	שַׂעֲרַת	בְּשָׂרִי׃
और-हवा	पर-	मेरे-मुख	गुज़री	खड़े-हो-गए	बाल	मेरे-शरीर-के
H7307		H6440	H2498	H5568	H8185	H1320

मेरे सामने से एक आत्मा जैसी गुजरी जिससे मेरे शरीर में रोंगटे खड़े हो गये।

16

יַעֲמֹד	וְלֹא־	אַכִּיר	מַרְאֵהוּ	תְּמוּנָה	לְנֶגֶד	עֵינָי	דְּמָמָה	וָקוֹל	אֶשְׁמָע׃
खड़ा-रहा	और-नहीं-	पहचाना-मैं	उसका-रूप	आकृति	सामने	मेरी-आँखों	नीरवता	और-आवाज़	सुनी-मैंने
H5975	H3808		H4758	H8544	H5048		H1827		H8085

वह आत्मा चुपचाप ठहर गया किन्तु मैं नहीं जान सका कि वह क्या था। मेरी आँखों के सामने एक आकृति खड़ी थी, और वहाँ सन्नाटा सा छाया था। फिर मैंने एक बहुत ही शान्त ध्वनि सुनी।

17

הַאֱנוֹשׁ	מֵאֱלוֹהַּ	יִצְדָּק	אִם	מֵעֹשֵׂהוּ	יִטְהַר־	גָּבֶר׃
क्या-मनुष्य	एलोहा-से	धर्मी-होगा	या	अपने-बनानेवाले-से	शुद्ध-होगा-	पुरुष
H0582	H0433	H6663			H2891	H1397

“मनुष्य परमेश्वर से अधिक उचित नहीं हो सकता। अपने रचयिता से मनुष्य अधिक पवित्र नहीं हो सकता।

18

הֵן	בַּעֲבָדָיו	לֹא	יַאֲמִין	וּבְמַלְאָכָיו	יָשִׂים	תָּהֳלָה׃
देख	अपने-दासों-पर	नहीं	विश्वास-करता-है	और-अपने-दूतों-पर	रखता-है	मूर्खता
H2005	H5650	H3808	H0539	H4397		H8417

परमेश्वर अपने स्वर्गीय सेवकों तक पर भरोसा नहीं कर सकता। परमेश्वर को अपने दूतों तक में दोष मिल जातें हैं।

19

אַף	שֹׁכְנֵי	בָתֵּי־	חֹמֶר	אֲשֶׁר־	בֶּעָפָר	יְסוֹדָם	יְדַכְּאוּם	לִפְנֵי־	עָשׁ׃
कितना-अधिक	रहनेवाले	घरों-	मिट्टी-के	जिनकी-	धूल-में	उनकी-नींव	कुचले-जाते-हैं-वे	सामने-	पतंगे
H0637	H7931				H6083	H3247	H1792	H6440	

सो मनुष्य तो और भी अधिक गया गुजरा है। मनुष्य तो कच्चे मिट्टी के घरौंदों में रहते हैं। इन मिट्टी के घरौंदों की नींव धूल में रखी गई हैं। इन लोगों को उससे भी अधिक आसानी से मसल कर मार दिया जाता है, जिस तरह भुनगों को मसल कर मारा जाता है।

יֹאבֵֽדוּ׃	לָנֶ֥צַח	מֵ֝שִׂ֗ים	מִבְּלִ֥י	יֻכַּ֑תּוּ	לָעֶ֣רֶב	מִבֹּ֣קֶר	20
नाश–होते–हैं	सदा–के–लिए	ध्यान–देनेवाला	बिना	टूटे–जाते–हैं	शाम–तक	सुबह–से	
H0006	H5331		H1097	H3807	H6153	H1242	

> लोग भोर से सांझ के बीच में मर जाते हैं किन्तु उन पर ध्यान तक कोई नहीं देता है। वे मर जाते हैं और सदा के लिये चले जाते हैं।

בְחָכְמָֽה׃	וְלֹ֣א	יָ֝מ֗וּתוּ	בָּ֑ם	יִתְרָ֣ם	נִסַּ֣ע	הֲלֹא־	21
बुद्धि–में	और–नहीं	मरते–हैं	उनमें	उनकी–रस्सी	उखाड़ी–गई	क्या–नहीं–	
H2451	H3808	H4191			H5265	H3808	

> उनके तम्बूओं की रस्सियाँ उखाड़ दी जाती हैं, और ये लोग विवेक के बिना मर जाते हैं।”